प्रश्नोत्तर पाठ 2 - राम -लक्ष्मण -परशुराम संवाद (तुलसीदास) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य ख़ंड

1 परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत किन शब्दों में करते हैं?

CBSE 2020

उत्तर: परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत करते हुए कृते हैं कि यह बालक मददृदिं लगता हैं और काल के वश में आकर अपने ही काल का नाश करने वाला हैं। इसकी स्थिति इसी समान हैं जेंसे सूर्यवंशी होने पर भी चंद्रमा में कलंक हैं। यह सम्पूर्ण रूप से निडर, ऊंड और मूर्ख हैं, इसे आखिोन का ज्ञान तक नहीं हैं। यह क्षण भर में काल को प्राप्त हो जायेगा, फिर आप मुझे दोष मत दीजिएगा।

2 परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई, उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए। CBSE 2013, 12, 09

अथवा 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर राम और लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए। CBSE 2016, 11

अथवा 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा'-के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए। CBSE 2017

उत्तर: राम-लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ राम राम स्वभाव से कोमल और विनयशील हैं। उनके मन में बड़ों के प्रति श्रद्दा और आदर हैं। वे गुरजनों के सामने झुकना अपना धर्म समझते हैं। वे मर्यादापूर्ण परशुराम के वित्त बात कठोर होने पर भी स्वयं को उनका दास कहते हैं। उनके वचन अग्नि में जल के समान शीतल थे। इस प्रकार, वे परशुराम का भी दिल जीत लेते हैं।

लक्ष्मण लक्ष्मण, राम से चंचलर्त्त पूर्ण क्तिु स्वभषकि तेज हैं। जब अत्यंत की कोमिल शोभित हो जाते हैं। उनके शब्दों में परशुराम के क्रोध को शांत करने का अहंकार नहीं दिखा। यहां तक कि सभा के लोग भी उनके व्यवहार को अनुचित कहने लगते हैं। लक्ष्मण के वचन अग्नि में धी के समान हैं। लक्ष्मण वीर, साहसी और निडर हैं। इसलिए परशुराम के क्रोध और फरसे से वह नहीं डरते। बावजूद इसके लक्ष्मण अपने अग्रज राम का आदर करते हैं और उन पर आई विपदा का सामना स्वयं करने के लिए तैयार रहते हैं। साथ-ही-साथ वह अपने कुल की लोक-मर्यादाओं का भी पालन करते वाले हैं।

परीक्षा उपयोगी

- महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- CBSE पैटर्न पर आधारित
- आसान भाषा में समझें
- अच्छे अंक पक्का करें

Online Teaching With Nikita

प्रश्नोत्तर पाठ 2 - राम -लक्ष्मण -परशुराम संवाद (तुलसीदास) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

3 लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा हो, उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर:

लक्ष्मण - - हे मुनि! हमारे लिए तो सभी धनुष एक समान है।

परशुराम - - यह कोई सामान्य धनुष नहीं है, यह शिवाजी का धनुष है।

लक्ष्मण - - यह पुराना धनुष तो टूटे मान से टूट गया। श्रीराम ने तो इसका नया समझा था।

परशुराम - - हे मूढ़ बालक! तुम्हें अब कोई मुझसे नहीं बचा सकता।

लक्ष्मण - - यह तो छूने से टूट गया, भला इसमें श्रीराम का क्या दोष ?

परशुराम - - मैं तुम्हें बालक समझकर नहीं मार रहा, तुम मेरे क्रोध को नहीं जानते। मैंने अनेक बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर दिया है।

4 परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न काव्यांश के आधार पर लिखिए

बाल ब्रह्मचारी अति कोधी ।
भुवन को भूमि भूप बिनु कीन्ही ।
सहस्रबाहुयुजु छेदनिहारा ।
मातु पितहि जनि सोकबसु करहिं महङ्चिकिस्रो।
गर्मन्दि के अभंक दलन परसु मारे अति घोर ॥

बिरदिविहित क्षत्रियकुल दोषी ।।
विपुल बार महिदेवकन्द तौन्दी ।।
परसु बिलोड़ महीभुब्रनमारा।।
नर्मकंद के अनेक दलन परसु मोरे अति घोर ।।

अथवा 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में परशुराम ने अपने विषय में जो कहा उसे अपने शब्दों में लिखिए। CBSE 2008

उत्तर: परशुराम ने सभा में कहा कि मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ और अत्यंत कोधी स्वभाव का हूँ। सारी दुनिया जानती है कि मैं क्षत्रिय कुल का नाश करने वाला हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल से अनेक बार इस पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया था और जोति के नाम पर घमंड करने वाले क्षत्रियों को दंड भी देते थे। मैंने इस पृथ्वी से सहसबाहु की भुजाओं को काट डाला था। मेरा यह परशु इतना भयानक है कि इसे देखने मात्र से सिरयों के जबेंसर शिथिल भी नष्ट हो जाते हैं।

5 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई? CBSE 2013 अथवा 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर संदेभ में लिखिए कि परशुराम की क्रोधपूर्ण बातें सुनकर लक्ष्मण ने उन्हें शूरवीर की क्या पहचान बताई?

उत्तर: लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई:

- वीर योद्धा अपनी चेतेता का ध्यान अपने मुँह से नहीं करते। अपने बल का बखान करना तो बरयों का काम है।
- वीर व्यक्ति धैर्यवान और क्रोध रहित होता है।
- वीर योद्धा अशब्द नहीं बोलते हैं।
- वीर योद्धा अपना प्रताप युद्भूमि में दिखाते हैं।

परीक्षा उपयोगी

- महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- CBSE पैटर्न पर आधारित
- आसान भाषा में समझें
- अच्छे अंक पक्का करें

STUDY SMART BE BRIGHT

Online Teaching With Nikita

प्रश्नोत्तर पाठ 2 - राम -लक्षण -परशुराम संवाद (तुलसीदास) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

6 साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: साहस और शक्ति एक योद्धा के अनिवार्य गुण हैं। यदि इन गुणों के साथ विनम्रता हो तो अहंकार ही होने वाला कोई विवाद या युद्ध नहीं हो पाता। विनम्र व्यक्ति अपनी विनम्रता से शत्रु के क्रोध को शांत कर देता है। क्रोध क्षणिक होता है, पर बार शन्त होने पर विवेक जाग्रत होता है और अहंमार ही नष्ट हो जाता है।

परशुराम और लक्ष्मण दोनों के उदाहरण हमारे सामने हैं। परशुराम पराक्रमी हैं, किन्तु स्वयं को महापराक्रमी, बाल ब्रहमचारी, क्षत्रिय कुल धातक कहना उनके घमंड को दर्शाते हैं। लक्ष्मण का साहस हमें भला लगता है, किन्तु वह भी अपनी सीमाएं तोड़ देते हैं। वीर-वीर वह बहुत ऊग्र, कठोर और असहज हो जाते हैं। इस कारण सभी समाधान उनके विरद्ध हो जाते हैं। दूसरी ओर रामचन्द्र शक्ति और साहस के साथ विनम्रता का भी परिचय देते हैं, इसलिए वे परशुराम सहित सबका दिल जीत लेते हैं।

परीक्षा उपयोगी

- महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- CBSE पैटर्न पर आधारित
- आसान भाषा में समझें
- अच्छे अंक पक्का करें

7 भाव स्पष्ट कीजिए

(क) विद्सि लखब बोले मुनु बानी।
अहो मुर्निसु महाभ्रट मानीं।।
पुनि पुनि मोहि देखत अकामा।
करत उड़ातन भुठिटि फरासा।।

(ख) इहों क्रुम्म्ड्वरितया कोठ नाहीं।
जे नरजारीं देखि त्मरि जाहीं।।
देखि कुठार सरासन बाना।
मैं कहुॅ़ कहा सहित अभिमाना।।

(ग) गणैस्म्मुनु कह हठय हरि मुनिहि हसरिये सूझ
अथवग्र खड़ गत्ऊ क्रोधव अबमई न बुझ अघुज।।
। CBSE 2016

उत्तर: (क) लक्ष्मण हेंसकर कौमल वाणी में परशुराम से बोले—हे मुनि! आप तो मान हुए योद्धा निकले। आप तो मुझे अपना पराया बार-बार ऐसे दिखा रहे हैं, जैसे फुंर मारकर पछस्र उठा देते हों।

(ख) लक्ष्मण क्रोध से वशीभूत मुनि परशुराम को यह बताना चाहते हैं कि वे उन दोनों भाइयों को कमजोर समझने की भूल न करें। वह उन्हें यह भी सूचित करते हैं कि वह तो उनका परशा और धनुष-बाण देखकर ही अभिमान सहित उनसे बातें कर रहे थे। इसे मुनिवर कामरांन न समझ लें।

(ग) विश्बामित्र परशुराम की बासमझीं पर मन-ही-मन मुस्कुराते हैं। वे सोचते हैं कि परशुराम राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय बालक समझ रहे हैं। बह इनके बल और पराक्रम को नहीं जानते। वे दोनों क्षश्निमसी तलवार हैं गनने की बनी तलवार नहीं हैं, जो जीभ पर जाते ही गल जाए।

STUDY SMART BE BRIGHT

प्रश्नोत्तर पाठ 2 - राम -लक्ष्मण-परशुराम संवाद

(तुलसीदास) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

8 पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियों में लिखिए।

उत्तर: प्रस्तुत पाठ 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से संकलित है। इसमें तुलसी ने शुद्ध-साहित्यिक अवधी भाषा का प्रयोग करते हुए चौपाई-दोहा-छंद शैली अपनाई है। भाषा सरल, सरस और मधुर है। इस काव्य पाठ में वीर रस एवं रौद्र रस की अनुभूति जगह-जगह होती है।

लक्ष्मण के कथनों में व्यंजना शक्ति परिलक्षित होती है। पद्य में अलंकार अपने सहज एवं स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत हुए हैं। अनुप्रास अलंकार की छटा सर्वत्र विद्यमान है। उपमा, उपेक्षा, रूपक, अनुप्रास भी स्थान-स्थान पर द्रष्टव्य हैं, जो भाषा को और अलंकृत करते हैं। शब्द चयन भी अवसर के अनुरूप है, जो सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भावों को बहत्न करने में पूर्णतया सम्र्थ है। कोमलकांत पदावली के प्रयोग से पद्य में संगीतात्मकता और गेयता का गुण आ गया है।

परीक्षा उपयोगी

- महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- CBSE पैटर्न पर आधारित
- आसान भाषा में समझें
- अच्छे अंक पक्का करें

9 इस पूरे प्रसंग (राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद) में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: सर्वप्रथम जब श्रीराम ने कहा कि धनुष भंग करने वाला आपका कोई सेवक ही होगा, तब परशुराम जी ने स्वर में कहा कि शत्रुता का कार्य करने में कोई सेवकाई नहीं होती।

लक्ष्मण और परशुराम जी के मध्य के संवाद तो व्यंग्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। लक्ष्मण ने परशुराम जी से कहा कि सभी धनुष एक जैसे ही हैं, आप अनावश्यक ही क्षोभित हो रहे हैं। तब परशुराम ने अपना फरसा दिखाया और कहा कठोर बोलने वाला यह बालक अब मारे जाने योग्य है। इस पर लक्ष्मण ने व्यंग्य किया कि बार-बार फरसा दिखाकर आप द सिद्ध करने चाहते हैं? क्या आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहतें हैं? यहां कोई कुम्हई का छोटा-सा कच्चा फल नहीं है जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाए। इसी प्रकार, जब बार-बार परशुराम जी अपनी वीरता का बखान करते लगें, तब लक्ष्मण उनकी वीरता पर व्यंग्य करते हुए उन्हें काय्य करने से भी नहीं चूकते। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनुपम सौंदर्य विद्यमान है।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT

प्रश्नोत्तर पाठ 2 - राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

(तुलसीदास) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पथ खंड

10 **निम्नलिखित पंक्तियों की प्रमुख अर्थछाया पहचानकर लिखिए**

(क) बालहु बोलि बध नहि तीही।

(ख) 'कोटि कह्ल्टि सम बचन तुह्मारा।

(ग) तुम्हहिं तौ नातु धिक जनु लावा।

(घ) बार-बार मोहि लजि बोरावौं।

(ङ) लखन उत्तर अत्ति सरिस मुगुकरकोप कुसानु

उत्तर:

(क) 'कहहुं' में विनय भाव है तथा 'तुम्हारा' में सम्मान भाव प्रकट होता है।

(ख) 'जट काटि' में तपस्वी रूप, 'मुरझारा' में कठोर तपस्वी जीवन का चित्रण है।

(ग) 'जानकीनाथ' कहने में आदर है तथा स्वयं को उनका सेवक बताने का भाव है।

(घ) 'कोप औरि' में क्रोध है तथा 'चलइ' में चुनौती देने का भाव है।

(ङ) 'भयसु न' में निर्भयता, 'लोकपरलोकहुँ सुदाइड़' में परलोक तक कल्याण की भावना।

भाव स्पष्ट कीजिए

(क) विनिस लखह बोले मूद बानी। अहो मुनिसु महाभ्टट मानी।
पुनि पुनि मोहिं देखत अकामा। करत उदातन भुग्रिहि फरसामा।।'

➡ लक्ष्मण ने देखा कि परशुराम्म जी बड़े वीर और तपस्वी हैं। राम जी ने सम्मानपूर्वक मधुर वाणी में उनसे बात की और उन्हें बार-बार आदर दिया। यह देखकर परशुराम जी का क्रोध शांत होने लगा।

(ख) इहाँ कुस्ब्ददतिया कोठ नाहिं। जे नरजानी देखि मुरि जाहि।
देखि कुटर सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।'

➡ लक्ष्मण कहते हैं कि यहां कोई डरने वाला कार्य नहीं है। जो स्वयं को वीर समझता है, वह सामने आकर सामना करे। मैंने इनका (परशुराम जी का) क्रोध देखकर यह कहा, इसमें मेरा कोई अभिमान नहीं था।

(ग) गाथिसुत् कह हदय हरि मुनिहि हरिये। सूझ
अयग़य खांड न उरखमय अजुंझं न्ह बझ्रू असुझा।। CBSE 2016

➡ लक्ष्मण कहते हैं कि हे मुनिवर! आप समझदार हैं, अर्जुन भी कठिन कठिन कार्य कर चुके हैं। फिर भी यदि आप युद्ध ही चाहते हैं तो अभी आज्ञा दें। मेरा उद्देश्य केवल इतना था कि आपकी वीरता का बखान करूँ, न कि आपको युद्ध के लिए उकसाना।

11 **रचना और अभिव्यक्ति**

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' को पढ़कर उनके व्यक्तित्व की झलक लगाइए।

उत्तर –

राम – मर्यादित, विनयशील, धैर्यवान और करूणामय हैं। वे शत्रु के प्रति भी सम्मान रखते हैं और क्रोध को शांत करते हैं।

लक्ष्मण – वीर, सत्यवादी, निर्भीक और क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाले हैं। अन्याय का विरोध करने में पीछे नहीं हटते।

परशुराम – तपस्वी, क्रोधी, स्वाभिमानी और न्यायप्रिय हैं। परंतु अंततः वे विवेकशील हैं और योग्य को पहचानते हैं।

सीख: यह संवाद हमें विनम्रता, संयम, धैर्य, पराक्रम और धर्म-निष्ठा का पाठ पढ़ाता हैं।

12 'लक्ष्मण, राम से धनुष का प्रत्यंचा ढीली करने के लिए क्यों कहते हैं?

उत्तर: लक्ष्मण को लगा कि परशुराम का क्रोध और उनका अभिमान बढ़ रहा है। वे नहीं चाहते थे कि बात बढ़े और कोई अनर्थ हो। इसलिए वे राम से कहते हैं कि धनुष की प्रत्यंचा ढीली करें जिससे परशुराम शांत हो और स्थिति सामान्य हो जाए। राम की आज्ञा में बात करने वाला सेवक थे।

परीक्षा उपयोगी

- ✔ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- ✔ CBSE पैटर्न पर आधारित
- ✔ आसान भाषा में समझें
- ✔ अच्छे अंक पक्का करें

STUDY SMART BE BRIGHT

Online Teaching With Nikita